

कानूनी सूचना / Copyright Notice: महाकाली तंत्र की इस प्रामाणिक पद्धति, गुप्त चक्र कोड्स और पाठ्यसामग्री को बिना आधिकारिक लिखित अनुमति के किसी भी रूप में कॉपी, रीपोस्ट, व्यावसायिक उपयोग या डिजिटल रूप से प्रसारित करना पूर्णतः वर्जित है। ऐसा करने पर कानूनी एवं आध्यात्मिक अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी। यदि कोई इसे साझा करना चाहता है, तो पूर्व लिखित अनुमति लें और प्रामाणिक क्रेडिट (Credit) अवश्य प्रदान करें।

# महाकाली तंत्र साधना प्रवेशिका

## शून्य से सिद्धि तक: सम्पूर्ण गृहस्थ दीक्षा एवं भैरव नियमावली

Premium Masterclass Blueprint: Comprehensive Householder Sadhana & Bhairav Codes

Authority: Amitacharya, Supreme Guru of Mahakali Tantra

"ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि॥"

## भाग १: प्रामाणिक परंपरा, गुरु तत्व एवं १३-स्तरीय विज्ञान

### १. भैरव तत्व की वास्तविक चेतना (The Divine Core):

भगवान भैरव महादेव शिव के ही पूर्ण जागृत और परम कृपालु स्वरूप हैं। कलयुग के इस तीव्र समय में, गृहस्थ जीवन की समस्त बाधाओं—जैसे ऋण (कर्ज), कोर्ट-कचहरी, मानसिक क्लेश, शत्रु भय और अज्ञात ऊर्जा अवरोधों को समूल नष्ट करने के लिए भैरव साधना से अधिक तीव्र, सुरक्षित और अचूक कोई अन्य मार्ग नहीं है।

### २. अमित आचार्य जी का प्रामाणिक परिचय (Lineage Authority):

अमित आचार्य (Supreme Guru of Mahakali Tantra) ने तंत्र के क्लिष्ट, भ्रामक और डरावने स्वरूप को पूरी तरह से समाप्त कर इसे गृहस्थों के जीवन में समृद्धि लाने का माध्यम बनाया है। आचार्य जी के 13-Level Diagnostic Energetic Science के सिद्धांतों पर आधारित यह साधना पूरी तरह से हानिरहित है, जिसका साधक पर कोई भी विपरीत प्रभाव नहीं होता।

## भाग २: पूर्ण साधना मैट्रिक्स (सामग्रियां एवं दिव्य निर्देश)

नए और आम साधकों की सूक्ष्म शुद्धि के लिए अनिवार्य सामग्रियों और नियमों का विवरण नीचे दी गई तालिका में स्पष्ट है:

विषय (TOPIC)	महाकाली तंत्र पीठ प्रामाणिक नियम (AUTHENTIC PROTOCOLS)
दिशा (Direction)	साधना करते समय आपका मुख दक्षिण (South) या पूर्व (East) दिशा की ओर होना चाहिए। कोर्ट-कचहरी और शत्रु बाधा निवारण के लिए दक्षिण दिशा ही सर्वश्रेष्ठ परिणाम देती है।
आसन (Mystic Mat)	शुद्ध ऊन या कंबल का आसन प्रयोग करें। काले, लाल या पीले रंग का कंबल ऊर्जा संरक्षण के लिए सर्वोत्तम माना गया है।
वस्त्र (Sadhana Dress)	साधना काल में स्वच्छ, ढीले और आरामदायक सूती वस्त्र पहनें। वस्त्रों का रंग भी काला, लाल या पीला होना चाहिए।
चित्र / विग्रह (Iconography)	लकड़ी की चौकी पर लाल या काला वस्त्र बिछाकर भगवान बटुक भैरव (सौम्य बाल रूप) या काल भैरव का शांत चित्र स्थापित करें।
दीपक (The Divine Flame)	चौकी पर सरसों के तेल (Mustard Oil) का एकमुखी या चौमुखी दीपक प्रज्वलित करें। यह सुरक्षा चक्र का निर्माण करता है।
धूप (Incense Codes)	गुग्गुलु या शुद्ध लोबान की तीव्र और वातावरण को शुद्ध करने वाली प्रामाणिक धूपबत्ती का ही प्रयोग करें।
पुष्प (Floral Offerings)	पीले फूल (गेंदा), लाल गुलाब या आक (मदार) के पुष्प। भगवान भैरव को रक्त और पीत वर्ण अत्यंत प्रिय हैं।
माला (The Consecrated Rosary)	केवल प्रामाणिक, प्राण-प्रतिष्ठित और सिद्ध <b>***रुद्राक्ष माला***</b> (१०८ मनके)। यह दिव्य तरंगों को शरीर में संचित करती है।

## भाग ३: भोग विज्ञान एवं निस्तारण के गुप्त नियम

साधना काल में भोग के सही निस्तारण (Dispensation) को लेकर नए साधकों में बहुत असमंजस रहता है। अमित आचार्य जी के अनुसार इन वैज्ञानिक तंत्र नियमों का पालन करें:

- दैनिक भोग (Daily Offering):** साधना सत्र पूर्ण होने के तुरंत बाद या अगली सुबह, चौकी पर चढ़ाए गए सात्विक भोग (जैसे जलेबी, बेसन के लड्डू, मिश्री या भुने चने) को महाप्रसाद के रूप में स्वयं ग्रहण करें या परिवार में वितरित करें। इसे फेंकना या अनादर करना सर्वथा वर्जित है।
- श्वान (Dog) को अर्पण - परम रहस्य:** यदि संभव हो, तो अपने भोग का एक अंश किसी काले या सामान्य श्वान (कुत्ते) को अवश्य खिलाएं। श्वान भगवान भैरव का साक्षात् वाहन है; उसे तृप्त करने से साधना की ऊर्जा साधक के चक्रों में १० गुना अधिक तीव्रता से काम करती है।
- साधना पूर्णाहुति विशेष भोग:** २१ या ४१ दिनों की साधना अवधि पूरी होने पर, किसी प्राचीन भैरव मंदिर में जाकर बूंदी के लड्डू या इमरती का भोग लगाएं और दीन-दुखियों या जरूरतमंदों में भोजन वितरित करें।

## भाग ४: साधना काल की अनिवार्य जीवनशैली (SADHANA LIFESTYLE)

मंत्र चेतना को अपने तंत्र (शरीर) में सुरक्षित रूप से धारण करने के लिए इन आचार-संहिताओं का कड़ाई से पालन करें:

- आहार की शुचिता (Dietary Discipline):** साधना के दिनों में तामसिक भोजन, मांस, अंडा, और मदिरा (Alcohol) का पूर्णतः त्याग अनिवार्य है। यदि प्याज और लहसुन का भी त्याग किया जाए, तो रीढ़ की हड्डी में ऊर्जा का प्रवाह अत्यधिक शुद्ध रहता है।
- वाक् संयम और मौन (Speech Control):** व्यर्थ का विवाद, अत्यधिक बोलना, झूठ बोलना, या किसी की पीठ पीछे निंदा करने से शरीर में संचित हुई मंत्र शक्ति तुरंत क्षीण हो जाती है। कम से कम बोलें और शांत रहें।
- मानसिक स्थिति (Absolute Fearlessness):** मन में यह अटूट विश्वास रखें कि अमित आचार्य जी और साक्षात् महादेव का सुरक्षा कवच आपके साथ है। साधना के दौरान होने वाले हल्के स्पंदन, शरीर में भारीपन या गर्माहट से डरें नहीं; यह आपकी आंतरिक अशुद्धियों के जलने की सामान्य प्रक्रिया है।
- पूर्ण ब्रह्मचर्य (Celibacy):** निर्धारित साधना अवधि (११, २१ या ४१ दिन) तक शारीरिक और मानसिक दोनों स्तरों पर ब्रह्मचर्य का पूर्ण निष्ठा से पालन करें।

## भाग ५: दैनिक साधना क्रम - चरण-दर-चरण विधि

अपने आसन पर बैठें, तीन बार आचमन करें, अपने ऊपर थोड़ा जल छिड़कें और शांत मन से निम्नलिखित दिव्य क्रम का अनुसरण करें:

### चरण १: गुरु स्मरण एवं अनुज्ञा (Guru Permission):

यदि आप अभी तक दीक्षित नहीं हैं, तो साक्षात भगवान शिव को ही अपना परम गुरु मानकर अमित आचार्य जी के चरणों का ध्यान करते हुए इस मंत्र का जाप करें:

"ॐ नमः शिवाय गुरुवे सच्चिदानंद मूर्तये। निष्प्रपंचाय शांताय निरालंबाय  
तेजसे ॥"

मन में प्रार्थना करें: "हे गुरुदेव! मैं इस सहज भैरव साधना में प्रवेश कर रहा हूँ, मुझे पूर्ण सुरक्षा, मार्गदर्शन और सिद्धि प्रदान करें।"

### चरण २: श्री गणेश ध्यान (Obstacle Removal):

किसी भी साधना में विघ्न न आए, इसके लिए सर्वप्रथम प्रथम पूज्य गणेश जी का जप करें:

"ॐ गं गणपतये नमः"

(२१ बार या न्यूनतम १ माला / 21 times or 1 Mala)

### चरण ३: कुल देवी-देवता एवं पितृ ध्यान (Ancestral Alignment):

अपने रक्त और वंश की सुरक्षा के लिए अपने पितरों और कुलदेवता का स्मरण अत्यंत आवश्यक है:

"ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ पितृभ्यः नमः।"

(११ बार शांत मन से जाप करें / 11 times)

### चरण ४: चक्र एवं वातावरण पवित्रीकरण (Purification):

अपने दाहिने हाथ में थोड़ा जल लेकर अपने सिर और आसन के चारों ओर छिड़कते हुए इस मंत्र का उच्चारण करें:

"ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स  
बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥"

## भाग ६: गृहस्थों के लिए सिद्ध एवं परम कल्याणकारी मंत्र

यह बटुक भैरव मंत्र सात्विक, परम सौम्य और पूर्णतः सुरक्षित है। यह आम गृहस्थ व्यक्ति के जीवन से सभी नकारात्मक तंत्र बाधाओं, शत्रुओं और कंगाली को तुरंत समाप्त कर देता है:

॥ ॐ बं बटुक भैरवाय नमः ॥

"Om Bam Batuk Bhairavaya Namah"

**जप एवं अनुष्ठान विधि:** रुद्राक्ष की माला से प्रतिदिन निश्चित समय पर न्यूनतम १ माला (१०८ बार) या ३ माला का जप करें। यह क्रम २१ दिनों तक बिना खंडित किए लगातार चलना चाहिए। जप के दौरान अपना ध्यान दीपक की लौ पर या दोनों भोहों के बीच (आज्ञा चक्र) पर केंद्रित करें।

## भाग ७: साधना समापन एवं दिव्य क्षमा प्रार्थना

जप पूर्ण होने के बाद अपनी अंजलि (हथेली) में थोड़ा सा जल लें, उसे भूमि पर छोड़ें और कहें: "यह जप मैं भगवान बटुक भैरव के श्री चरणों में समर्पित करता हूँ।" तत्पश्चात दोनों हाथ जोड़कर इस मंत्र से अपनी भूलों के लिए क्षमा मांगें:

"मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर। यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे॥"

**भावार्थ:** "हे प्रभु भैरवनाथ! मैं मंत्र की शुद्धता, तंत्र की क्रिया और पूर्ण भक्ति से हीन हूँ। जाने-अनजाने में मुझसे जो भी त्रुटि या भूल हुई हो, उसे अपनी असीम कृपा से क्षमा करें और मेरी इस लघु सेवा को पूर्ण रूप से स्वीकार करें।"

ॐ महाकाली तंत्र पीठ - आधिकारिक संपर्क एवं परामर्श केंद्र ॐ

 India WhatsApp

+91 95690 24784

 Canada WhatsApp

+1 416 557 2692

 Official Website

mahakalitantra.com

---

**कानूनी सूचना / Copyright Notice:** महाकाली तंत्र की इस प्रामाणिक पद्धति, गुप्त चक्र कोड्स और पाठ्यसामग्री को बिना आधिकारिक लिखित अनुमति के किसी भी रूप में कॉपी, रीपोस्ट, व्यावसायिक उपयोग या डिजिटल रूप से प्रसारित करना पूर्णतः वर्जित है। ऐसा करने पर कानूनी एवं आध्यात्मिक अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी। यदि कोई इसे साझा करना चाहता है, तो पूर्व लिखित अनुमति लें और प्रामाणिक क्रेडिट (Credit) अवश्य प्रदान करें।